>

Title: Regarding missing of Captain Kalyan Singh of Assam Regiment since 1971 Indo-Pak War.

श्री महेन्द्रसिंह पी. चौहाण (साबरकांठा): आदरणीय सभापति जी, आपने मुझे शून्यकाल के तहत अपने क्षेत्र के अति संवेदनशील विषय को उठाने की इजजत दी है, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

सभापति जी, मेरे संसदीय क्षेत्र साबरकांठा के हिम्मतनगर तहसील के चांदरणी गांव के निवासी कैप्टन कल्याण सिंह राठौर जो भारतीय फ़ौज के आसाम रेजिमेंट से संबंधित थे, उनका आई.सी. नंबर 23198 था। कैप्टन कल्याणिसंह राठौर सन् 1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान दिनांक 05 दिसंबर सन् 1971 के दिन जम्मू क्षेत्र के छाम्ब सेक्टर में बलसारा पॉइंट पर तैनात थे। उस दिन युद्ध चल रहा था। युद्ध सामग्री की कमी होने के कारण उन्होंने अपने अन्य साथियों को वहां से अपने प्राण बचा कर वापस जाने को कहा तथा स्वयं पूरी रात मोर्चे पर डटे रह कर अकेले दुश्मन का मुकाबला करने लगे। जब अगली सुबह उनकी सैन्य टुकड़ी के लोग युद्ध सामग्री के साथ वहां पर पहुंचे तब उनको वहां पर जिंदा या मुर्दा हालत में भी नहीं पाया। इससे यह आंशका पैदा होती है कि कहीं दुश्मन ने उन्हें मारकर वहीं खाई में फेंक दिया हो या जिंदा युद्ध बंदी बना कर अपने साथ ले गए हों।

महोदय, युद्ध बंदी के बाद उनके परिवार वालों ने उनके बारे में बहुत खोजबीन की लेकिन आज तक उनके परिवार को कोई जानकारी नहीं मिली है। मैं इस विषय को दो बार शून्य काल में इसी सदन में उठा चुका हूँ। लेकिन रक्षा मंत्रालय की तरफ से कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला है।

महोदय, अभी तीन दिन पहले दिनांक 03.12.12 को दैनिक भास्कर अखबार में छपी खबर से यह पता चला कि पाकिस्तान ने अपने कई युद्ध कैदियों को ओमान की जेल में शिफ्ट किया था। अखबार द्वारा किए गए खुलासे के अनुसार 15 पंजाब रेजीमेंट के जवान जसपाल सिंह को सेना ने शहीद घोषित कर दिया था। लेकिन उन्हें पाकिस्तानी सेना ने सन् 1971 की जंग में हुसैनीवाला बार्डर से युद्ध बंदी के रूप में गिरफ्तार किया था तथा कुछ समय तक उन्हें तथा उनके चार अन्य सैनिक साथियों के साथ पाकिस्तानी जेल में रखने के बाद ओमान की जेल में भेज दिया गया था। तब से आज तक वह जेल में कैद हैं।

महोदय, इस खुलासे के बाद काफी संभावना है कि कैप्टन कल्याणसिंह भी ओमान या अन्य जेलों में बंद होंगे। आज भी उनके परिवार के लोगों की आंखों में आंसू हैं।

महोदय, यह मेरी समझ से परे है कि रक्षा मंत्रालय अपने गुमशुदा युद्ध सैनिकों को ले कर इतना असंवेदनशील एवं निराशजनक क्यों है? अपनी जान की बाजी लगा कर युद्ध मोर्चे पर डटे रहने वाले उन वीर जवानों, जिन्होंने देश के लिए अपनी जान की कुर्बानी दी है, उनके बारे में बिना पता लगाए ही भगोड़ा या गुमशुदा कहना उनके परिवार के साथ अन्याय है तथा मेरे क्षेत्र के साथ-साथ पूरे देश का एवं सभी सैनिकों का अपमान है।

महोदय, युद्ध समाप्ति को आज 52 साल बीत गए हैं। हमारे नौजवान को कब शहीद का सम्मान मिलेगा? क्या उन्हें हमेशा गुमशुदा ही रखेंगे? क्या उन्हें अपने शौर्य के लिए सम्मानित नहीं किया जाना चाहिए?

सभापति जी, आपके माध्यम से सरकार से मेरी मांग है कि हमारे गुमशुदा सैनिक जो ओमान या अन्य जेलों में बंद हों तो तत्काल उनकी जांच करा कर, अगर वे जिंदा हैं तो उन्हें अपने देश में लाने की कार्यवाही तुंत करनी चाहिए। जो शहीद हो चुके हैं या जिन्होंने अपने देश के लिए कुर्बानी दी है, उन्हें शहीद घोषित कर के यथोचित शौयचक्र से सम्मानित करना चाहिए तथा उनके परिवार को योग्य आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए।